ब्रह्मा जी की आरती

पितु मातु सहायक स्वामी सखा,
तुम ही एक नाथ हमारे हो ।

जिनके कुछ और आधार नहीं,
तिनके तुम ही रखवारे हो ।

सब भाँति सदा सुखदायक हो,
दुख निर्गुण नाशन हरे हो ।

प्रतिपाल करे सारे जग को,
अतिशय करुणा उर धारे हो ।

भूल गये हैं हम तो तुमको,
तुम तो हमरी सुधि नहिं बिसारे हो ।

उपकारन को कछु अंत नहीं,
छिन्न ही छिन्न जो विस्तारे हो ।

महाराज महा महिमा तुम्हारी,
मुझसे विरले बुधवारे हो ।

शुभ शांति निकेतन प्रेम निधि,
मन मंदिर के उजियारे हो ।

इस जीवन के तुम ही जीवन हो,
इन प्राणण के तुम प्यारे हो में ।

तुम सों प्रभु पये “कमल” हरि,
केहि के अब और सहारे हो ।

॥ इति श्री ब्रह्मा आरती ॥

eAstroHelp